

# *The State Funeral of Luang Por Chah*



COMMEMORATIVE ISSUE





W. A. V. E.

Wisdom Audio Visual Exchange

Reprint:	20151	copies	Dec	1998
	1000	copies	Aug	2003
	1000	copies	Oct	2005

Please note:

All W.A.V.E. reprints are  
strictly for free distribution.

*This is to ensure that the sponsors' intention -  
the promulgation of the Dhamma  
for the benefit of all living beings -  
is achieved without hindrance.*

*We would like to express our admiration to our sponsors for  
their generosity.*

*May the merit of their act help speed them to Nibbana.*

**Printed for free distribution as a gift of DHAMMA**



This is a special commemorative issue in honour of the passing away of Luang Por Chah and featuring reflections and reports from those who attended his funeral in Thailand in January 1993.



*Members of the International Sangha from branch monasteries associated with Luang Por Chah. Nationalities of those present, in order of frequency, included: British, American, German, Australian, Canadian, French, Japanese, New Zealander, Malaysian, Thai, Taiwanese, Israeli and Dutch. After the funeral there followed a three day Sangha gathering at Wat Pah Nanachat to discuss ways to maintain a sense of harmony within the Sangha.*

This is a special commemorative issue in honor of  
the passing away of Eugene C. Chap and featuring  
reflections and remembrances of those who attended  
his funeral in 1993.

W. R. V. E.

For Artin Victor Exchange

1993	1994	1995	1996	1997	1998	1999	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021	2022	2023	2024	2025	2026	2027	2028	2029	2030	2031	2032	2033	2034	2035	2036	2037	2038	2039	2040	2041	2042	2043	2044	2045	2046	2047	2048	2049	2050	2051	2052	2053	2054	2055	2056	2057	2058	2059	2060	2061	2062	2063	2064	2065	2066	2067	2068	2069	2070	2071	2072	2073	2074	2075	2076	2077	2078	2079	2080	2081	2082	2083	2084	2085	2086	2087	2088	2089	2090	2091	2092	2093	2094	2095	2096	2097	2098	2099	2100	2101	2102	2103	2104	2105	2106	2107	2108	2109	2110	2111	2112	2113	2114	2115	2116	2117	2118	2119	2120	2121	2122	2123	2124	2125	2126	2127	2128	2129	2130	2131	2132	2133	2134	2135	2136	2137	2138	2139	2140	2141	2142	2143	2144	2145	2146	2147	2148	2149	2150	2151	2152	2153	2154	2155	2156	2157	2158	2159	2160	2161	2162	2163	2164	2165	2166	2167	2168	2169	2170	2171	2172	2173	2174	2175	2176	2177	2178	2179	2180	2181	2182	2183	2184	2185	2186	2187	2188	2189	2190	2191	2192	2193	2194	2195	2196	2197	2198	2199	2200	2201	2202	2203	2204	2205	2206	2207	2208	2209	2210	2211	2212	2213	2214	2215	2216	2217	2218	2219	2220	2221	2222	2223	2224	2225	2226	2227	2228	2229	2230	2231	2232	2233	2234	2235	2236	2237	2238	2239	2240	2241	2242	2243	2244	2245	2246	2247	2248	2249	2250	2251	2252	2253	2254	2255	2256	2257	2258	2259	2260	2261	2262	2263	2264	2265	2266	2267	2268	2269	2270	2271	2272	2273	2274	2275	2276	2277	2278	2279	2280	2281	2282	2283	2284	2285	2286	2287	2288	2289	2290	2291	2292	2293	2294	2295	2296	2297	2298	2299	2300	2301	2302	2303	2304	2305	2306	2307	2308	2309	2310	2311	2312	2313	2314	2315	2316	2317	2318	2319	2320	2321	2322	2323	2324	2325	2326	2327	2328	2329	2330	2331	2332	2333	2334	2335	2336	2337	2338	2339	2340	2341	2342	2343	2344	2345	2346	2347	2348	2349	2350	2351	2352	2353	2354	2355	2356	2357	2358	2359	2360	2361	2362	2363	2364	2365	2366	2367	2368	2369	2370	2371	2372	2373	2374	2375	2376	2377	2378	2379	2380	2381	2382	2383	2384	2385	2386	2387	2388	2389	2390	2391	2392	2393	2394	2395	2396	2397	2398	2399	2400	2401	2402	2403	2404	2405	2406	2407	2408	2409	2410	2411	2412	2413	2414	2415	2416	2417	2418	2419	2420	2421	2422	2423	2424	2425	2426	2427	2428	2429	2430	2431	2432	2433	2434	2435	2436	2437	2438	2439	2440	2441	2442	2443	2444	2445	2446	2447	2448	2449	2450	2451	2452	2453	2454	2455	2456	2457	2458	2459	2460	2461	2462	2463	2464	2465	2466	2467	2468	2469	2470	2471	2472	2473	2474	2475	2476	2477	2478	2479	2480	2481	2482	2483	2484	2485	2486	2487	2488	2489	2490	2491	2492	2493	2494	2495	2496	2497	2498	2499	2500	2501	2502	2503	2504	2505	2506	2507	2508	2509	2510	2511	2512	2513	2514	2515	2516	2517	2518	2519	2520	2521	2522	2523	2524	2525	2526	2527	2528	2529	2530	2531	2532	2533	2534	2535	2536	2537	2538	2539	2540	2541	2542	2543	2544	2545	2546	2547	2548	2549	2550	2551	2552	2553	2554	2555	2556	2557	2558	2559	2560	2561	2562	2563	2564	2565	2566	2567	2568	2569	2570	2571	2572	2573	2574	2575	2576	2577	2578	2579	2580	2581	2582	2583	2584	2585	2586	2587	2588	2589	2590	2591	2592	2593	2594	2595	2596	2597	2598	2599	2600	2601	2602	2603	2604	2605	2606	2607	2608	2609	2610	2611	2612	2613	2614	2615	2616	2617	2618	2619	2620	2621	2622	2623	2624	2625	2626	2627	2628	2629	2630	2631	2632	2633	2634	2635	2636	2637	2638	2639	2640	2641	2642	2643	2644	2645	2646	2647	2648	2649	2650	2651	2652	2653	2654	2655	2656	2657	2658	2659	2660	2661	2662	2663	2664	2665	2666	2667	2668	2669	2670	2671	2672	2673	2674	2675	2676	2677	2678	2679	2680	2681	2682	2683	2684	2685	2686	2687	2688	2689	2690	2691	2692	2693	2694	2695	2696	2697	2698	2699	2700	2701	2702	2703	2704	2705	2706	2707	2708	2709	2710	2711	2712	2713	2714	2715	2716	2717	2718	2719	2720	2721	2722	2723	2724	2725	2726	2727	2728	2729	2730	2731	2732	2733	2734	2735	2736	2737	2738	2739	2740	2741	2742	2743	2744	2745	2746	2747	2748	2749	2750	2751	2752	2753	2754	2755	2756	2757	2758	2759	2760	2761	2762	2763	2764	2765	2766	2767	2768	2769	2770	2771	2772	2773	2774	2775	2776	2777	2778	2779	2780	2781	2782	2783	2784	2785	2786	2787	2788	2789	2790	2791	2792	2793	2794	2795	2796	2797	2798	2799	2800	2801	2802	2803	2804	2805	2806	2807	2808	2809	2810	2811	2812	2813	2814	2815	2816	2817	2818	2819	2820	2821	2822	2823	2824	2825	2826	2827	2828	2829	2830	2831	2832	2833	2834	2835	2836	2837	2838	2839	2840	2841	2842	2843	2844	2845	2846	2847	2848	2849	2850	2851	2852	2853	2854	2855	2856	2857	2858	2859	2860	2861	2862	2863	2864	2865	2866	2867	2868	2869	2870	2871	2872	2873	2874	2875	2876	2877	2878	2879	2880	2881	2882	2883	2884	2885	2886	2887	2888	2889	2890	2891	2892	2893	2894	2895	2896	2897	2898	2899	2900	2901	2902	2903	2904	2905	2906	2907	2908	2909	2910	2911	2912	2913	2914	2915	2916	2917	2918	2919	2920	2921	2922	2923	2924	2925	2926	2927	2928	2929	2930	2931	2932	2933	2934	2935	2936	2937	2938	2939	2940	2941	2942	2943	2944	2945	2946	2947	2948	2949	2950	2951	2952	2953	2954	2955	2956	2957	2958	2959	2960	2961	2962	2963	2964	2965	2966	2967	2968	2969	2970	2971	2972	2973	2974	2975	2976	2977	2978	2979	2980	2981	2982	2983	2984	2985	2986	2987	2988	2989	2990	2991	2992	2993	2994	2995	2996	2997	2998	2999	3000
------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------

# The State Funeral of

## Luang Por Chah

Publications from Amaravati are for free distribution. In most cases, this is made possible through offerings from individuals or groups, given specifically for the publication of Buddhist teachings. Further information is available from the address below.

Sabbadānaṃ dhammadānaṃ jināti  
'The gift of Dhamma surpasses all other gifts.'

©Amaravati Publications April 1993/2536

Amaravati Publications  
Amaravati Buddhist Centre  
Great Gaddesden  
Hammel Hempstead  
Hertfordshire HP1 3BZ  
England

(This book is an extract from Forest Sangha Newsletter, Number 24, pages 1-7, and is published with permission from Amaravati Publications.

(Type set by Dr. Oo Khaik Cheang)



## *The State Funeral of Luang Por Chah*

It is difficult for us to imagine the level of devotion of the Thai people towards such a teacher as **Luang Por Chah**. Though his love and compassion touched only a limited number of people in person, his recorded Dhamma talks, together with the practice exemplified by his disciples, have allowed his teaching to live in the hearts of millions.

**Ajahn Sucitto** takes us back to the historic occasion of **The State Funeral of Luang Por Chah** which took place in January, one year after his passing away.

We knew that the funeral of Luang Por Chah would be a special event: it had been a frequent topic for discussion at Wat Pah Pong during the last few years of the Master's illness; it would bring disciples from all over the world and it would (most likely) be presided over by either H.M. King Bhumipol, H.M. Queen Siriket, or even both.

These three factors seemed to heighten both the auspiciousness of the occasion and its potential difficulties: who would attempt to organise such an event – and amongst so many possible views, how would one plan emerge to accommodate such an indeterminate but certainly large multitude of visitors with their needs for food and shelter? What kind of style and standard – given Wat Pah Pong's

noted and principled austerity – would be appropriate for a Royal Funeral?

The Sangha in Europe were not involved in any of the negotiations and decision-making. We only heard that Ajahn Liam (the acting Abbot of Wat Pah Pong) and Ajahn Pasanno (acting Abbot of Wat Pah Nanachat) were devoting all their time to making the arrangements, that Sangha gatherings at Wat Pah Pong were held to ensure harmony and mutual support, that a new sala, dining hall and chedi (stupa) were being constructed, that monks at Wat Pah Pong were labouring for 10 – 12 hours per day on building projects, that bhikkhus were coming from branch monasteries to help with the work, and that the tentative estimate of 200,000 guests, itself staggering for a forest monastery that might accommodate 100 or so in a full Rains Retreat, could turn out to be an underestimate.

On arriving at Ubon, the Western bhikkhus and siladhara (Luang Por Sumedho, Ajahn Khemadhammo, abbots and senior monks from the branch monasteries in the West; Ajahn Viradhammo and the entire Sangha from New Zealand; Ajahns Jagaro and Brahmawangso from Western Australia; Sisters Sundara and Candasiri) were taken to Wat Pah Nanachat, about 10 kilometres from Wat Pah Pong. Residents gave up their kutis to the gathering of 60 Western bhikkhus, samaneras and nuns, opting to



sleep out on bamboo platforms under their mosquito net umbrellas. Graciousness, quiet hospitality and ease were the order of the day and the dark forest absorbed everyone. After morning chanting brought us together, alms rounds introduced us to the local villagers who provided ample food, enthusiastically, for all their new guests. Things seemed capable of stretching beyond rational expectation.

On the 9<sup>th</sup>, the first day of funeral proceedings, the Sangha of Wat Pah Nanachat travelled to Wat Pah Pong to join in the occasion of moving Luang Por Chah's body to the chedi. It was another time for the mind to stretch. After the buses dropped us off at one side of the monastery and we had walked through the gate, we were stopped by the spectacle of a large and extremely graceful pure white chedi. Its inverted bowl base straddled a broad grass mound and its tall sinuous column climbed into the bright blue tropical sky – with broad avenues proceeding from it in four directions.

The stupa is modelled on two of the most sacred shrines of Thailand; the base echoes that of Wat Phra Pathom Chedi, the oldest stupa in Thailand and the spire is a replica of Wat Phra That Phanom in Nakhon Phanom, the major shrine of the North East. The entirety – 32 meters high, 50 meters broad – was constructed in six months, mostly by the Sangha at Wat Pah Pong. The gold-painted domed ceiling

inside the chedi was supported by two concentric circles of pillars, also painted in gold; the inner circle of four pillars representing the Four Noble Truths, the outer of twelve representing the structure of Dependent Origination. In the centre of these circles was the crematory, a large metal box covered with boards which were decorated with gold wax arabesques and floral designs that gave it the appearance of a giant candle.

In front of the crematory was the shrine which would bear a life-size painting of Luang Por, his bowl and robes and later, his relics. The floor on which we knelt to pay our respects was of polished black granite whose mirror-like surface reflected the pillars so that one seemed to be suspended inside the matrix of a Dhamma mandala. This mandala was to be the setting for Luang Por's funeral casket. For a week people would be filing through this sacred place paying their last respects; here a round-the-clock meditation vigil would be held and his body would finally return to the elemental state. After the cremation, when the crematory was dismantled, a new shrine bearing his relics in a crystal bowl would be established in its place as a lasting memorial, a focus for devotion, reflection and meditation.

About 900 bhikkhus were present in the huge new sala – and how many nuns and lay people? The effect of so much uniformity made it impossible to

count. There were only two colours in this vast devotional mural - the ochre brown of bhikkhus and samaneras, and the white of the nuns, anagarikas and lay disciples - it was almost hypnotic, with features like the occasional head of hair, or the dark brown robes of our two nuns almost reassuring the eye that it was not fixated in some surrealist trance.

After the chanting and the asking for forgiveness, the casket was borne out by two groups of 16 disciples, laymen who had shaved their heads and taken the Eight Precepts for the entire event. The casket - a fantastic creation of polished dark wood spangled and braided with mother-of-pearl nagas, devatas, and Buddhas - was made, fantastically enough, by a man serving life imprisonment in Ubon, as an act of devotion to Luang Por Chah. With Ajahns Liam and Pasanno carrying a life-size portrait of Luang Por Chah at the front, followed by a gathering of the most senior monks, the casket was carried out of the sala and around the centre of the monastery followed by the rest of the assembly, and brought into the shrine in the chedi.

And so it began. The mind stretched to accommodate the superlatives as smoothly as the monastery stretched day-by-day to accommodate 1,000...1,500...3,000...5,000 bhikkhus: bhikkhus being bused off to surrounding villages for alms rounds, eating en masse, bowl washing en masse,



chanting and meditating en masse and peacefully abiding. And there were about 1,000 nuns, and over the days nearly over a million lay visitors (500,000 on 16<sup>th</sup> January alone) passing through, filing into the chedi to bow three times to the shrine, or camping out in their thousands in the grounds under umbrellas, and gathering as a congregation around the chedi for the evening chanting, meditation and Dhamma talk. Thousands of books were given away: over forty free-food kitchens provided food for everyone. (Any form of buying and selling was firmly but politely forbidden as inappropriate within the monastery grounds.) First-aid posts were established and nurses were freely available for anyone who felt ill or faint in the 30 degrees plus heat.

At times it seemed that everyone one had ever even thought of in this Sangha life was there – particularly on the cremation day itself. On the 16<sup>th</sup> of January the gathering included the Sangharaja (the Supreme Patriarch, Somdet Nanasamvara) Somdet Buddhajahn, Tan Chao Khuns Debvedi, Paññananda, Dhammarajanidesa; Ajahn Maha Boowa and all the teachers and abbots of Wat Pah Pong's 130 branch monasteries; occasionally even the face of a lay disciple from England would catch one's eye in the flowing stream of humanity. By 4 pm bhikkhus, nuns, former bhikkhus, villagers and ministers were seated silently around the chedi; then

a distant fanfare, a ripple of excitement in the crowd, and eventually two figures walking under ceremonial black umbrellas, well attended by men in uniforms, ascended the steps into the stupa to initiate the ceremonial climax of the occasion. Their Majesties the King and Queen had come to pay their respects; having presented ten sets of robes to ten Tan Chao Khuns, they offered candles, incense and flowers, knelt on the granite floor of the chedi and bowed.

After the Royal couple it was everyone else's turn; from the Sangharaja, senior Mahatheras, Government officials, and the bhikkhu Sangha, to the nuns and the laity. Evening meditation at 6 pm was followed by chanting, meditation, and desanas from Ajahn Maha Boowa, Ajahn Sumedho and Tan Chao Khun Debvedi. At midnight, the majority of the bhikkhu Sangha managed to squeeze into the chedi to ask forgiveness of Luang Por, to take the coffin from the casket and commit it to the flames. We stood back to open our hearts to this final moment.

But the actions of humans, however superlative, are never final. Chance and circumstance have a way of surpassing us. And so it was – the effect of all the offerings of sandalwood on the coffin, and maybe too much charcoal, caused the fire to burn too fiercely – scorching the wiring that was to open

the vents in the chimney; the heat was therefore all contained in the crematory which split open... flames licked out to catch the wax decorations, smoke billowed out and filled the chamber, the boards crushed down... people stood back, some began to bring water, fire trucks appeared.... From outside the chedi as it glowed in the spotlights against the dark sky, the spectacle had the quality of a vision – the Four Elements dramatically manifesting within the place of purity as some final image of the life of a Master.

But everyone remained cool and peaceful; the fire was extinguished, people began mopping up, some found places out of the cold night wind to meditate, some began to walk home. The mind was allowed to contract to more mundane considerations. All those people – following a routine that began at 3 am with morning chanting, a day filled with meditation sittings and Dhamma talks until 10 pm; hours sitting on the hard concrete or the hard earth, not in rigid order, but peacefully, reflectively. Reading the moment-by-moment stabbing twinges running through this soft Western body, watching the Thais huddling under blankets in balaclavas in the cool night wind, contemplating the amount of effort put in by the organisers of the ceremony, one recognised the common quality that even a monarch bows to. We all had a chance to unhook in some small way from the persistent nagging of desire.



Here were the remains of a person who let go of a lot more – of all of it, some believe. This point is not worth debating – but there is no doubt that he did enough to show us that that was the Path and that it could be consistently and beautifully practised.

After three days, a chosen number of bhikkhus presided over the extraction of the relics from the crematory. Most were locked up for safe keeping; three large relics, white and honeycombed like coral, were placed on the shrine for public view. When we left, the Sangha were still using the chedi for their group meditation practice.

*I took my seat one day in the new eating hall, finding myself sandwiched between old friends, some of whom I had not seen for nigh on fifteen years, and surrounded by an enormous sea of monks.*

*The hall was filled, as was the entire central area of the monastery, up to where the forest began. One brown wave amongst some 2,000 others that day. As we ate, I thought of where I might escape to wash my bowl afterwards – to avoid all the rush and confusion – but then I realised 'Why do you need to be so clever, to always be different? Why not just jump in and be like all the others?'*

*And how delicious that was; surely there was a great bustle and a blur of water splashes, soap powder, brown robes and bodies, but we moved around each other with good humour and deference, and one could see right there, that if we take the trouble to go into the rough and tumble of life with mindfulness and a good heart, peace, joy and the delight of communal harmony are the qualities that can be coaxed forth from it.*

**Ajahn Amaro**

*In the Ajahn Chah style, we can hear teachings whenever we are ready to listen, and as the flames and smoke billowed out of the chedi, it caused me to reflect.*

*When the heart is properly prepared with patience, resolve and restraint, there is the strength to contain the power of the passions as they flare up.*

*But with uninspected cracks, or weaknesses in the system, we end up with an enormous mess.*

*One was reminded to prepare the 'container' of the heart with as much skilfulness as one can muster. It is true that we can't afford to take our time over practice, but it is also true that we mustn't try to rush it.*

**Ajahn Munindo**

We sat among the women on a mat on the sun-baked earth. Having been told to be there early, we arrived at 10 am (6 hours before the expected arrival of their Majesties, the King and Queen of Thailand). Even then it was hard to find a place, but we squeezed our way in just behind the white-robed, shaven-headed maechees and in front of the white-clothed upasikas. People sat quietly. There were occasional questions: 'Where do you come from?' 'Why are you wearing brown?' The reply: '10 precepts, Amaravati, disciple of Ajahn Sumedho,' seemed to satisfy most. From time to time, Thai herbal sweets were passed around, and at midday some of the laywomen brought out picnics of sticky rice and vegetables. And we all just sat. When more people came, space was made somehow. We all squashed up together - no-one seemed to mind. In front, hundreds of maechees: behind, as far as the eye could see, thousands and thousands of women... a few lay down to rest (many had been up at 3 am for morning puja) - most just sat. It was hot, but there was a breeze and when the sun came through the trees at the hottest part of the day, two of the maechees lent us an umbrella, and themselves shared one in front of us. It was like an epic movie unfolding in slow motion before our eyes: The splendour of the chedi; thousands of bhikkhus; the stewards in white; the soldiers; the journalists with their official armbands; the first-aid team in their starched white aprons... Then at 4 pm - the King



*and Queen with their retinue! A surge of delight went through the crowd, as they appeared and quickly ascended the steps into the chedi itself – and was repeated as they re-emerged to take their places in the pavilion opposite. Then it was time for everyone to start moving and pay their respects to Luang Por Chah and place small offerings by the entrance to the chedi.*

**Sister Candasiri**

### **The Abbot Departs**

The night wind arrives,  
as the abbot departs.  
Forest leaves pour down  
like tears or monsoon rain,  
confusing the moths.

In a monastery without monks,  
old women sit through the night.  
After the chanting  
and the observances,  
long after the monks return,  
old women sit through the night.

The wind races on.  
Patches of moonlight moving,  
becoming dancing ghosts  
on the forest floor.

Bamboo and branches snapping,  
and around one small light  
the moths circle on.

**Daniel Barnes**

Wat Pah Nanachat 16.01.93

This poem was written the night before news of the passing away of Luang Por Chah was known.

*At 10 pm I laid down to sleep on the marble floor of the sala, and my bones were so sore by 1.30 am, I got up and walked around. By 2.30 everyone was gathering in the sala for early morning puja at 3.30! No more sleep. I felt quite ill, dizzy, hungry, hot, and short of sleep.*

*When the bhikkhus set off on pindabaht I'd never in my life seen so many. It was like the London Marathon at a slower pace. Thousand after thousand. No order of seniority; small boys mixed in with Ajahns etc. (No nuns). I watched them go past for two and a half hours and only saw one face I knew.*

*Lay people are fed once a day in one section of the 150 acre monastery where no less than 42 food kitchens have been set up by various companies or extended families. They have giant cooking pots in each one which they continually refill as the people come. It's a free-for-all - any kitchen will feed you and the queue is usually very short. So many different kinds of food; plates, spoons, drinks, all*

*found. There is not a baht (penny), changes hands within the monastery walls. The cooks all have a whale of a time calling something that sounds like 'here! Try mine, it's good.' Whole families are cutting, chopping, boiling, frying and washing dishes, from grandma to toddler; and young adults carry trays of free sweets and chewing gum.*

**Medhina: from a letter to her family**

*Actually, in truth there isn't  
anything to human beings*

*Whatever we may be it's only  
in the realm of appearances.  
If we take away the Apparent  
and see the Transcendent,  
we see that there isn't  
anything there.*

*There are simply the universal  
characteristics – birth in the  
beginning, change in the middle  
and cessation in the end.*

*This is all there is.*

*If we see that all things are  
like this, then no problems  
arise.*

*If we understand this we will  
have contentment and peace*

**Luang Por Chah**







***Maha Sadhu***  
***To Amaravati Publications April 1993/2536***  
***for allowing us the reprint of***  
***“The State Funeral of Luang Por Chah ”***

***May the author and the generous sponsors***  
***of this Dhamma Dana be blessed with***

***Good Health, Happiness, Prosperity and***  
***The attainment of Wisdom Supreme***

***May all sentient beings rejoice and***  
***share in the merit of this praiseworthy act***

***Sadhu! Sadhu! Sadhu!***



***Sabbadanam Dhammadanam Jinati  
The Gift of Truth Excels All Other Gifts***

***Dedication of Merit***

~ \* ~

***With lots of gratitude to our grandmother  
Mdm Soo Cheng Gnoot  
(1915 – 8.10.2005)  
And also to our Parents, Virtuous Teachers,  
Brothers, Sisters, Relatives,  
Friends, Associates, Celestial Beings,  
Devas and all Sentient Beings  
Who live in Countless Universe***

***By the virtue of the merit accrued  
May each & everyone of you  
Cultivate the path towards  
The freedom from all dukkha  
(Viz Nibbana)***

***Sadhu! Sadhu! Sadhu!***

***Sponsored by : Mr Lim Johnny and Charlie (1000 copies)***

THOSE WISHING TO CONTRIBUTE TOWARDS THE NEXT DHAMMA TITLE OR REPRINT  
THOSE TITLES WHICH ARE OUT OF STOCK MAY WRITE, EMAIL OR PHONE TO :-

\* MRS LIM TAY POH  
c/o NO.2, JALAN CHAN AH THONG  
OFF JLN TUN SAMBANTHAN  
50470 KUALA LUMPUR  
MALAYSIA

TEL : 603-22749509 (H)  
FAX: 603-79552767  
E-MAIL: [hockchai@tm.net.my](mailto:hockchai@tm.net.my)  
H/P: 012-3115950

* MR/S LIM SIANG HOR	(PENANG)	TEL: 04-8264358 (H)
		H/P: 016-4100949
		H/P: 016-4100886
		E-MAIL: <a href="mailto:shlim@hotmail.com">shlim@hotmail.com</a>
* MR DAVID KU	(MALACCA)	H/P: 012-3045845
* MR ONG HOCK CHUAN	(JOHORE BAHRU)	H/P: 019-2773584
* MR OH TEIK BIN	(T. INTAN, PERAK)	TEL: 05-6223420 (H)
* MR OOI SIAN KAY	(ALOR SETAR)	H/P: 012-4622339
* MS PHUA MEE LOO	(Kuantan, PAHANG)	H/P: 012-9219200
* MR BOBBY TAY	(K. TRENGGANU)	H/P: 019-9834139
* MR YONG ING HO	(SARAWAK)	TEL: 019-8281217
* MR SEBASTIAN WONG	(SINGAPORE)	TEL: 02-5464628 (H)
* MR LIM TEONG CHUAN	(SYDNEY, AUS)	TEL: 02-96804868 (H)
* MR ALFRED CHI	(VICTORIA, AUS)	TEL: 03-97533050 (H)

#### Next Reprint

Next Reprint	No Worries
By	Luang Por Liem – Wat Pah Pong
Closing Date	31.3.2006
Next Reprint	No Worries (Mandarin)
By	Luang Por Liem
Closing Date	31.3.2006
Next Reprint	The Karma of Questions
By	Tan Acharn Thanissaro
Closing Date	30.6.2006
Next Reprint	Forest Recollections Wandering Monks (Mandarin)
By	Dhamma Garden
Closing Date	31.6.2006
Next Reprint	Meditation – 216 pages
By	Tan Acharn Thanissaro
Closing Date	30.9.2006
Next Reprint	9 Attributes of the Buddha (revised version)
By	Sayalay Susila
Closing Date	30.9.2006

Please feel free to visit our website :

[http://www.geocities.com/wave\\_books/index.html](http://www.geocities.com/wave_books/index.html)

THE FOLLOWING ARE TITLES OF DHAMMA BOOKS REPRINTED BY W.A.V.E. THOSE WITH AN  
ASTERISK (\*) ARE CURRENTLY OUT OF STOCK :

COPIES	TITLES	AUTHORS
4000	KING ASOKA	Thanissaro Bhikkhu
5000	ITIVUTTAKA	Thanissaro Bhikkhu
2000	A BURDEN OFF THE MIND - A STUDY GUIDE	Thanissaro Bhikkhu
2000	THE FOUR NOBLE TRUTHS - A STUDY GUIDE	Thanissaro Bhikkhu
1300	EDITATIONS - 40 DHAMMA TALKS	Thanissaro Bhikkhu
10,733	FRUIT OF KARMA (Chapter 1 - 20)	Phra Rajasuddhinanamongkol
7,500	FRUIT OF KARMA (Chapter 21 - 40)	Phra Rajasuddhinanamongkol
8000	THE LAW OF KARMA - Vol. 1	Phra Rajasuddhinanamongkol
7,310	THE LAW OF KARMA - Vol. 2	Phra Rajasuddhinanamongkol
7,500	THE LAW OF KARMA - Vol. 3	Phra Rajasuddhinanamongkol
13,961	ADVANTAGES OF CHANTING	Phra Rajasuddhinanamongkol
7000	ADVANTAGES OF CHANTING - Pocket Booklet	Phra Rajasuddhinanamongkol
4000	BEYOND THE STREAM OF THE WORLD	Phra Acariya Theon Khippapanno
5000	ENTERING THE STREAM OF DHAMMA	Phra Acariya Theon Khippapanno
4000	LOOKING INWARD	K. Khao-suan-luang
8000	READING THE MIND	K. Khao-suan-luang
3000	AN UNENTANGLED KNOWING	K. Khao-suan-luang
7000	PURE & SIMPLE	K. Khao-suan-luang
11,900	AWARENESS ITSELF	Ajahn Fuang Jotiko
8100	AWARENESS ITSELF (MANDARIN)	Ajahn Fuang Jotiko
11,000	MINDFULNESS OF BREATHING & 4 ELEMENTS MED	Ven Pa Auk Sayadaw
8400	LIGHT OF WISDOM	Ven Pa Auk Sayadaw
1050	LIGHT OF WISDOM (MANDARIN)	Ven Pa Auk Sayadaw
5,500	KNOWING & SEEING	Ven Pa Auk Sayadaw
1000	KNOWING & SEEING (MANDARIN)	Ven Pa Auk Sayadaw
3250	DAILY CHANTS	Pa Auk Meditation Centre
6,100	PALI-CHINESE CHANTING BOOK	Bhante Jutipanno
1500	GOOD, EVIL AND BEYOND	Payutto Bhikkhu
2000	HELPING YOURSELF TO HELP OTHERS	Payutto Bhikkhu
4000	HEART OF UNDERSTANDING	Thich Nhat Hanh
3000	A GUIDE TO WALKING MEDITATION	Thich Nhat Hanh
2000	PRESENT MOMENT WONDERFUL MOMENT	Thich Nhat Hanh
7000	THE LEGEND OF LUANG PHOR THOUT (E & M)	Bhikkhu
3000	TOUCHING THE EARTH	Grevil Lindop
12,200	THE BHIKKHUS' RULES - A GUIDE FOR LAYPEOPLE	Tan Acharn Ian Ariyaseko
10000	SIMPLY SO	Luang Boi Sim Buddhacaro
7000	FOLLOWING NATURE	Phra Ajahn Peth Thaniso
6000	UPOSATHA SILA	Somdet Phra Buddhagosa Cariya
16,000	LAY BUDDHIST PRACTICE	Bhikkhu Khantipalo
5000	HOW TO GET GOOD RESULTS FROM DOING MERIT	Phra Ajahn Pien Panyapatipo
6000	KINDNESS AS A SUPPORT FOR THE WORLD	Phra Ajahn Pien Panyapatipo
19,500	MESSAGE OF THE BUDDHA	Bhikkhu Dhammavuddho
12,500	MESSAGE OF THE BUDDHA (MANDARIN)	Bhikkhu Dhammavuddho
6000	LIBERATION	Bhikkhu Dhammavuddho
2000	RETURN TO THE ORIGINAL BUDDHA TEACHINGS	Bhikkhu Dhammavuddho
3000	THE RESEARCH OF THE ORIGINAL TEACHINGS (M)	Bhikkhu
10,200	GOOD QUESTION GOOD ANSWER	Dhammika Bhikkhu
3000	GOOD QUESTION GOOD ANSWER (MANDARIN)	Dhammika Bhikkhu
3500	5 PRECEPTS AND THE 5 ENNOBLERS	HRH Supreme Patriarch
7000	SINGULAR QUALITY OF AN ORDINARY MONK	Vatana Supromajakr, M. D.
5100	LITTLE DUST IN OUR EYES (MANDARIN)	Arya Khemma
2100	BEYOND THE HIMALAYAS	M. Mac Donald-Bayne
1000	THE YOGA OF THE CHRIST	M. Mac Donald-Bayne
34,000	THE BUDDHA AND HIS DRAMMA (SBOOKLET)	Compiled from Sources
2100	ESSENTIAL THEMES OF BUDDHIST LECTURES	Ashin Dittila
5000	THE 9 ATTRIBUTES OF THE BUDDHA (MANDARIN)	Saydara Suriya
5000	THE BLUEPRINT OF HAPPINESS (S/G)	Bhikkhu Anoma Mahinda
7000	MAHA KASSAPA	Nyanaponika Thera
3000	THE WAY OF MINDFULNESS	Soma Thera
3500	FISTFUL OF SAND	Phra Ajaan Suwat Suvaco
3500	TO ONE THAT FEELS	Luangpor Teean
6000	A MANUAL OF SELF - AWARENESS	Luangpor Teean Jittasubho
2765	MIND DEVELOPMENT	Tan Chao Khun Thep Visuddhikavi
4100	A DHAMMAPADA FOR CONTEMPLATION	Ajahn Manindro
1000	BUDDHIST MEDITATION	C. M. Chen
5000	DHAMMAPADA (MANDARIN)	Bhikkhu Chin Fa
2000	MAHA SATIPATTHANA SUTTA (MANDARIN)	Bhikkhu
2100	DRIZZLING RAIN (MANDARIN)	Phra Walasak Walattamo
4000	VENERABLE FATHER - A LIFE WITH ACHARN CHAH	Paul Breiter
8000	QUESTION AND ANSWERS WITH AJAAN SUMEDHO	Roger Wheeler
3150	BUDDHISM IN DAILY LIFE	Nina Van Gorkom
6500	INTRODUCTION TO INSIGHT MEDITATION	Bhikkhu Sucitto
2000	THE WAY TO PEACE AND HAPPINESS	Yogavacara Rahula
6000	ATULO - THE TEACHINGS OF LUANG PU DUN	Luang Pa Dharma 'Doo'
2000	CLEANSING THE MIND (MANDARIN)	Chan Fatt Bhikkhu
6000	THE STORY OF OLD MAN TIOW	Suchitra Rosencen
2500	THE MIND LIKE FIRE UNBOUND	Thanissaro Bhikkhu
1500	WISDOM OF TRUTH (MANDARIN)	Buddhadassa Bhikkhu
8000	EVERYMAN'S ETHICS	Wheel Publication no. 14
7000	THE 10 PERFECTIONS OF LORD BUDDHA	Extract from Thai Calendar
10,000	NOW IS THE KNOWING	Ven Ajahn Sumedho
2000	VIPASSANA BHAVANA (MANDARIN)	Achara Nanch
3000	KAMMA - A STUDY GUIDE	Thanissaro Bhikkhu
3000	BASIC THEMES	Phra Ajaan Lee Dhammadhara
1000	THE WAY OUT OF SUFFERING	Ven Ajahn Tong Sirmangalo
2000	A CHRONICLE OF THE BUDDHA'S TRAVELS	Bhikkhu Kantasilo
3500	TEACHING & TRAINING	Compiled by Bhikkhu Maneyya
4000	TOWARDS ETERNAL PEACE	Pa Auk Sayadaw
3170	GIFTS HE LEFT BEHIND	Phra Ajaan Dune Atulo
2000	RECOGNIZING THE DHAMMA - A STUDY GUIDE	Thanissaro Bhikkhu
	UNSHAKEABLE PEACE	Ven Ajahn Chah



THE FOLLOWING ARE TITLES OF DHAMMA BOOKS REPRINTED BY W.A.V.E. THOSE WITH AN ASTERISK (\*) ARE CURRENTLY OUT OF STOCK :

COPIES	TITLES	AUTHORS
11,700	SAYINGS OF THE BUDDHA	Ven Dr. K. Sri Dhammananda *
4500	BUDDHIST WAY (S/B)	Ven Dr. K. Sri Dhammananda *
9,925	WHY WORRY	Ven Dr. K. Sri Dhammananda *
14,400	MINDFULNESS IN PLAIN ENGLISH	Ven Dr. H. Gunaratana Nayaka Thera
2000	BHAVANA VANDANA	Ven Dr. H. Gunaratana Nayaka Thera *
6650	THE BUDDHA'S ANCIENT PATH	Piyadassi Thera
14,000	CHANTING SMALL BOOKLETS	Piyadassi Thera
7000	ANAPANASATI	Buddhadasa Bhikkhu
6000	HANDBOOK FOR MANKIND	Buddhadasa Bhikkhu *
8000	HANDBOOK FOR MANKIND (MANDARIN)	Buddhadasa Bhikkhu *
7000	BUDDHA DHAMMA FOR STUDENTS	Buddhadasa Bhikkhu *
1000	BUDDHA DHAMMA FOR STUDENTS (MANDARIN)	Buddhadasa Bhikkhu *
3000	THE BUDDHA'S DOCTRINE OF ANATTA	Buddhadasa Bhikkhu *
3000	THE FIRST 10 YEARS OF SUAN MOKKH	Buddhadasa Bhikkhu *
4000	THE FIRST 10 YEARS OF SUAN MOKKH (MANDARIN)	Buddhadasa Bhikkhu *
3000	NO RELIGION	Buddhadasa Bhikkhu *
4000	NO RELIGION (MANDARIN)	Buddhadasa Bhikkhu *
2000	A BUDDHIST CHARTER	Buddhadasa Bhikkhu *
13,000	PRISON OF LIFE	Buddhadasa Bhikkhu *
4300	PRISON OF LIFE (MANDARIN)	Buddhadasa Bhikkhu *
6000	MESSAGES OF TRUTH FROM SUAN MOKKH	Buddhadasa Bhikkhu *
1200	DHAMMIC SOCIALISM (MANDARIN)	Buddhadasa Bhikkhu *
4000	PATICCASAMUPPADA	Buddhadasa Bhikkhu *
2000	KEY TO NATURAL TRUTH	Buddhadasa Bhikkhu *
3500	HEART-WOOD FROM THE BO TREE	Buddhadasa Bhikkhu *
2000	HEART-WOOD FROM THE BO TREE (MANDARIN)	Buddhadasa Bhikkhu *
13,500	A STILL FOREST POOL	Phra Ajahn Chah
4100	A STILL FOREST POOL (MANDARIN)	Phra Ajahn Chah
16,000	MEDITATION	Phra Ajahn Chah
12,200	LIVING DHAMMA	Phra Ajahn Chah
3000	A TREE IN A FOREST	Phra Ajahn Chah
3124	A TREE IN A FOREST (MANDARIN)	Phra Ajahn Chah
4800	BODHINYANA, A TASTE OF LIVING DHAMMA (MANDARIN)	Phra Ajahn Chah
7500	BODHINYANA	Phra Ajahn Chah
10,000	A TASTE OF FREEDOM	Phra Ajahn Chah
11,618	GIFT OF DHAMMA (MANDARIN)	Phra Ajahn Chah
10,100	FOOD FOR THE HEART	Phra Ajahn Chah
4200	FOOD FOR THE HEART (MANDARIN)	Phra Ajahn Chah
12000	OUR REAL HOME AND TUCCHO POTHILA	Phra Ajahn Chah
6000	OUR REAL HOME (MANDARIN)	Phra Ajahn Chah
4000	THE BLOOMING LOTUS	Phra Ajahn Chah
3000	THE BLOOMING LOTUS (MANDARIN)	Phra Ajahn Chah
9000	THE PATH TO PEACE	Phra Ajahn Chah
9000	THE KEY TO LIBERATION	Phra Ajahn Chah
9000	CLARITY OF INSIGHT	Phra Ajahn Chah
1500	SEEING THE WAY (MANDARIN)	Phra Ajahn Chah
5500	SEEING THE WAY	Amaravati Publications
21,151	THE STATE FUNERAL OF LUANG POR CHAH	Amaravati Publications
12,000	NO AJAHN CHAH	Dhamma Garden
3500	NO AJAHN CHAH (MANDARIN)	Dhamma Garden
13,500	DHAMMA STORIES CARD (MANDARIN & ENGLISH)	Dhamma Garden
4300	CITTA VIVEKA	Ven Ajahn Sumedho
5000	MINDFULNESS THE PATH TO THE DEATHLESS	Ven Ajahn Sumedho
4000	PEACE AND KINDNESS	Ven Ajahn Sumedho
8000	TEACHINGS OF A BUDDHIST MONK	Ven Ajahn Sumedho
5650	TEACHINGS OF A BUDDHIST MONK (MANDARIN)	Ven Ajahn Sumedho
9300	THE FOUR NOBLE TRUTHS	Ven Ajahn Sumedho
3000	THE FOUR NOBLE TRUTHS (MANDARIN)	Ven Ajahn Sumedho
16000	GRATITUDE TO PARENTS	Ven Ajahn Sumedho
4000	THE WAY IT IS	Ven Ajahn Sumedho
5000	THINGS AS THEY ARE	Acariya Maha Boowa Nyanasampanno
5208	MODE OF PRACTICE OF ACHARN MUN - PATIDANA	Acariya Maha Boowa Nyanasampanno
8600	BIOGRAPHY OF ACHARN MUN - OLD VERSION	Acariya Maha Boowa Nyanasampanno
2000	BIOGRAPHY OF ACHARN MUN (MANDARIN)	Acariya Maha Boowa Nyanasampanno
4570	VEN ACARIYA MUN BHURIDATTA THERA	Acariya Maha Boowa Nyanasampanno
7000	STRAIGHT FROM THE HEART	Acariya Maha Boowa Nyanasampanno
5000	KAMMATHANA	Acariya Maha Boowa Nyanasampanno
1200	FOREST DHAMMA	Acariya Maha Boowa Nyanasampanno
5000	WISDOM DEVELOPS SAMADHI	Acariya Maha Boowa Nyanasampanno
5000	TO THE LAST BREATH	Acariya Maha Boowa Nyanasampanno
9000	A LIFE OF INNER QUALITY	Acariya Maha Boowa Nyanasampanno
6000	THE BALLAD OF LIBERATION FROM THE KHANDHAS	Phra Ajahn Mun Bhuridatta Thera
5000	A HEART RELEASED	Phra Ajahn Mun Bhuridatta Thera
4000	A HEART RELEASED AND OTHER TEACHINGS	Phra Ajahn Mun Bhuridatta Thera
13,000	STEPS ALONG THE PATH	Phra Ajahn Thate Desaransi
7000	ONLY THE WORLD ENDS	Phra Ajahn Thate Desaransi
4000	MEDITATION IN WORDS	Phra Ajahn Thate Desaransi
10,000	BUDDHO	Phra Ajahn Thate Desaransi
4000	AUTOBIOGRAPHY OF A FOREST MONK	Phra Ajahn Thate Desaransi
2700	THE FLAVOR OF DHAMMA	Phra Ajahn Thate Desaransi
12,200	FOOD FOR THOUGHT	Phra Ajahn Lee Dhammadhara
8000	INNER STRENGTH	Phra Ajahn Lee Dhammadhara
8700	KEEPING THE BREATH IN MIND	Phra Ajahn Lee Dhammadhara
9100	THE SKILL OF RELEASE	Phra Ajahn Lee Dhammadhara
6200	AUTOBIOGRAPHY OF AJAHN LEE	Phra Ajahn Lee Dhammadhara
7500	WHAT IS THE TRIPLE GEM	Phra Ajahn Lee Dhammadhara
5700	FRAMES OF REFERENCE	Phra Ajahn Lee Dhammadhara
4500	THE PATH TO PEACE & FREEDOM FOR THE MIND	Phra Ajahn Lee Dhammadhara
5500	A HANDBOOK FOR THE RELIEF OF SUFFERING	Phra Ajahn Lee Dhammadhara
3000	CRAFT OF THE HEART	Phra Ajahn Lee Dhammadhara
5000	THE EYE OF DISCERNMENT	Phra Ajahn Lee Dhammadhara
1000	DHAMMAPADA	Thanissaro Bhikkhu
2300	NOBLE STRATEGY	Thanissaro Bhikkhu



***Strictly for free distribution***  
**NO COMMERCIAL VALUE**